अवधेशकुमार सिंहा

सामाजिक दूरी मापदंड पर भारतीय उपसांस्कृतिक क्षेत्र

विभिन्न सांस्कृतिक एवं उपसांस्कृतिक जनपदोंके परस्पर मेल से स्वतंत्रताके पहले का भारत भावात्मक रूपमें एक सबल राष्ट्रवादी शक्तिके रूपमें उदित हुआ। सम्भवतः इसके कारण ही हमारे निरपेक्ष, जनतांत्रिक और प्रगतिशील नेताओंने विभिन्न राष्ट्रीयताके सिद्धान्तका विरोध किया। लेकिन आज फ़िजा बदलती जा रही है। आये दिन भारतीय एकीकरणको चुनौती देते हुए अक्सर कहा जा रहा है कि भारत विभिन्न राष्ट्रोंका संघ है। अपने कितने ही चेहरोंके साथ इधर वर्गविद्वेष और तोड़-फोड़ की भावना सर उठा रही है। इनसे हमारे राष्ट्रीय जीवनमें एक खतरा उत्पन्न हो गया है। इन बातोंको मद्देनजर रखते हुए शिक्षित भारतीय नौजवानोंकी भारतके उपसांस्कृतिक क्षेत्रोंसे सम्बन्धित कुछ रिश्तोंके विषयमें प्रतिक्रिया जानना अत्यावश्यक है। कुछ समाजशास्त्रियोंने बड़े मौकेसे विषयकी अहमियत महसूस की। फलस्वरूप बड़ौदा (हा, बी. बी. – १९३३) पटना (सिनहा, जी० एस० १९६४), और उत्कल (रथ, आर० और जे० पी० दास १९५६; कर्ण, एम० एन० १९६७) विश्वविद्यालयों के युवकवर्गका अध्ययन किया जा सका।

वर्तमान अध्ययन :

वर्तमान अध्ययनके सन्दर्भमें हमारी यह मान्यता रही है कि समानतावादी शैक्षणिक व्यवस्था संकुचित मनोवृत्तिके विरुद्ध पड़ती है और इसके विपरीत सामाजिक विद्वेष सामाजिक संबंधोंके मर्मस्थलको चोट पहुँचाती है। इन मान्यताओंके साथ हम बोगार्डस (बोगार्डस, यू. एस. १९३३) द्वारा प्रतिपादित सामाजिक दूरी मापदंडकी विधि का प्रयोग करना चाहते हैं। यूनिवर्स (universe) के रूपमें भारतीय तकनीकि संस्थान, कानपुरके छात्र पर्याप्त शिक्षित माने जा सकते हैं। (खासकर इस स्थितिमें जब कि भारतीय जनसंख्याका एक बहुत बड़ा हिस्सा निरक्षर है।)। सभी इन्फार्मेंट्स (informents) अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर चुके हैं और ऊँची शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरी तरफ भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्रों की चर्चा करते हुए हमने आजकलके राजनैतिक सरहदोंको ही उपसांस्कृतिक सीमारेखा माना है; यथा केरल, असम, आदि। वर्तमान अध्ययनके संदर्भमें ये राजनैतिक इकाइयोंके रुखमें स्वीकृत न हो कर उपसांस्कृतिक इकाईके रूपमें एक विशेष प्रकारकी जीवन पद्धतियोंका आयाम पेश करते हैं। तीसरी बात यों है कि विषयकी जटिलताके प्रति हम जागरूक हैं। हमारे लिये यह दावा करना हास्यास्पद होगा कि वर्तमान अध्यापनके लिये यहाँ प्रयुक्त विधि ही पर्याप्त है। बल्कि इसके विपरीत हमारा विश्वास है कि वर्तमान विधि सतही तौर पर कुछ प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डालती है। हम कह सकते हैं कि वर्तमान विषयके विस्तृत और गहरे अध्ययनके लिये प्रश्नावली (questionnaire), साक्षात्कार (interview) और कुछ हद तक पर्यवेक्षण (observation) विधियोंकी सहायता ली जानी चाहिए। इस प्रकारके अध्ययन प्रजातीय-सम्बन्ध (पेस्टीज एफ. आर. १९५२ और १९५३), धार्मिक रुझान

(स्पॉर्ल, डी० टी० १९५६) और सांस्कृतिक विद्वेषों (ग्रेय, टी० सी० और एस० थॉम्पसन — १९५३) को परखनेके लिये प्रयुक्त किये गये हैं। अंतिम, बोगार्डसके मापदंड और उनके द्वारा गिनाये गये सम्बन्धों पर नजर रखते हुए, हमने अपने भारतीय परिवेशके अनुसार मापदंडको संशोधित करनेकी आवश्यकता अनुभव की। इस प्रकार अपने दोस्त श्री एम० एन० कर्णके उत्कल विश्वविद्यालयके अध्ययनसे फायदा उठाते हुए, हमने एक नकारात्मक संबंधको भी शामिल किया।

अध्ययनकी सीमा और नमूना पद्धत्ति :

जैसा कि हमने ऊपर निवेदन किया है 'भारतीय तकनीकी संस्थान, कानपुरके सभी छात्रों पर अध्ययन करनेका तय किया गया। क्योंकि उम्र, लिंग, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, जन्मस्थान, और बड़े शहरोंमें आवासीय अनुभवके दृष्टिकोणसे ये छात्र एक बहुत आदर्श स्थितिमें हैं; जहाँ पर पर्याप्त विभिन्नता है। इन पहलुओंको ध्यानमें रखते हुए आकस्मिक नमूना पद्धति (accidental sampling technique) के सहारे इन्फार्मेंट्शका चुनाव किया गया। उम्र, लिंग, जन्मस्थान शैक्षणिक पृष्ठभूमि नागरिक आवासीय अनुभव और पैदाइशी उपसांस्कृतिक क्षेत्रके आधार पर इन्फार्मेंट्श इस प्रकार हैं :—

टेबल न० १

भारतीय तकनीकी संस्थान कानपुरके इंफार्मेंट्स संबंधी सूचनायें:

राजकीय आधार	**प्रतिशत**
१. उत्तर प्रदेश	४८
२. पंजाब	१०
३. राजस्थान	०८
४. मध्यप्रदेश	०६
५. बिहार	०६
६. उड़ीसा	०६
७. केरल	०६
८. गुजरात	०४
९. तमिलनाडु	०२
१०. मैसूर	०२
११. आंध्रप्रदेश	०२
जोड़	१००

लिंग	
प्रकार	प्रतिशत
पुरुष	६०
स्त्री	४०
जोड़	१००

उम्र	
प्रकार	प्रतिशत
किशोरावस्था	४४
१९ वर्ष और अधिक	५६
जोड़	१००

जन्मस्थान	
प्रकार	प्रतिशत
शहर	६६
देहात	३४
जोड़	१००

शैक्षणिक पृष्ठभूमि	
प्रकार	**प्रतिशत**
पूर्वस्नातक	६२
स्नातक	३८
जोड़	१००

उपरोक्त सूचनाओं पर सरसरी निगाहसे देखने पर जाहिर होता है कि छात्रोंका बहुत बड़ा हिस्सा (४८ %) उत्तर प्रदेशका निवासी है। उसी प्रकार असम, बंगाल, काश्मीर महाराष्ट्र और नागालैंडके विद्यार्थी हमारे नमूनेके अन्दर नहीं लिये जा सके। ६ प्रतिशत छात्रोंने सूचित किया कि उनका जन्म पश्चिम पाकिस्तान (पश्चिम पंजाब) में हुआ था। लेकिन एक लम्बे अरसेसे वे लोग दिल्ली या पंजाबमें निवास कर रहे हैं। इस प्रकार हमने भी इन्हें दिल्ली या पंजाबका निवासी मान लिया है। वर्तमान अध्ययनमें सुविधाके ख्यालसे हमने पंजाब हरियाना, दिल्ली, चंडीगढ़, और पश्चिम पंजाबके छात्रोंको पंजाब के अन्दर ही मान लिया। केन्द्र शासित क्षेत्र बहुत हद तक, अपनी अलग की सांस्कृतिक इकाई बनाये हुए हैं; लेकिन उनकी अपेक्षाकृत छोटी इकाईको वर्तमान अध्ययनके लिये हम पर्याप्त नहीं समझते।

पद्धति :

भारतीय परिवेशके अनुसार संशोधित बोगार्डस मापदंडमें नीचे लिखे सम्बन्धोंको परखनेकी कोशिश की गयी :—

(१) क्या आप विवाह करना चाहेंगे। चाहेंगी ?

(२) क्या आप अपने भोजनालयम हिस्सा लेने देंगे। देंगी ?

(३) क्या आप अपने मित्रके रूपमें स्वीकार करेंगे। करेंगी ?

(४) क्या आप अपने पड़ौसीके रूपमें स्वीकार करेंगे। करेंगी ?

(५) क्या आप व्यवसायमें हिस्सेदारके रूपमें स्वीकार करेंगे। करेंगी ?

(६) क्या आप ऑफिसमें इनके अधीन काम करना चाहेंगे। चाहेंगी ?

(७) क्या आप अपने राज्यमें इन्हें बसने देंगे। देंगी ?

(८) क्या आप अपने चुनावक्षेत्रमें इन्हें वोट देंगे। देंगी ?

(९) क्या आप अपने राज्यसे इन्हें निष्कासित करना चाहेंगे। चाहेंगी ?

अन्तिम सम्बन्ध अन्य आठ सम्बन्धों पर प्रतिबन्धके रूपमें आता है। क्योंकि सम्बन्ध (९) की स्वीकृतिका अर्थ अन्य सम्बन्धोंके लिये नकारात्मक उत्तर होता है। विद्यार्थियोंकी प्रतिक्रिया जाननेके लिये विभिन्न उपसांस्कृतिक क्षेत्रोंको अंग्रेजी वर्णानुसार संवार दिया गया; नागालैंड, उड़ीसा पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश। प्रत्येक विद्यार्थीको बोगार्डस के संशोधित सामाजिक दूरी मापदंड दी गयी; और उनसे किसी एक प्रकारके सम्बन्धके लिये केवल एक ही उपसांस्कृतिक क्षेत्र चुननेका आग्रह किया गया। विद्यार्थियोंसे इस प्रकार आग्रह किया गया :—"नीचे भारतके विभिन्न राज्यों (या उपसांस्कृनिक क्षेत्रों) के नाम लिखे गये हैं। प्रत्येक राज्यके सामने नौ प्रकारके सम्बन्धोंको लिखा गया है। ये नौ तरहके रिश्ते हैं, जिन्हें एक आदमी इन विभिन्न राज्योंके लोगोंके साथ स्थापित करना चाहेगा। आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि आप हर तरहके रिश्तेके लिये किसी भी एक ही राज्य को चुनें। इस सन्दर्भमें प्रत्येक राज्यके नागरिकों पर विचार करते हुए आपको पूरे समूह पर ध्यान देना चाहिये; न कि व्यक्ति विशेष पर, जिन्हें, आप अच्छी तरह जानते ही।"

सामाजिक दूरी मापदंड पर भारतीय उपसांस्कृतिक क्षेत्र

ग्राफ द्वारा प्रतिक्रिया प्रदर्शन

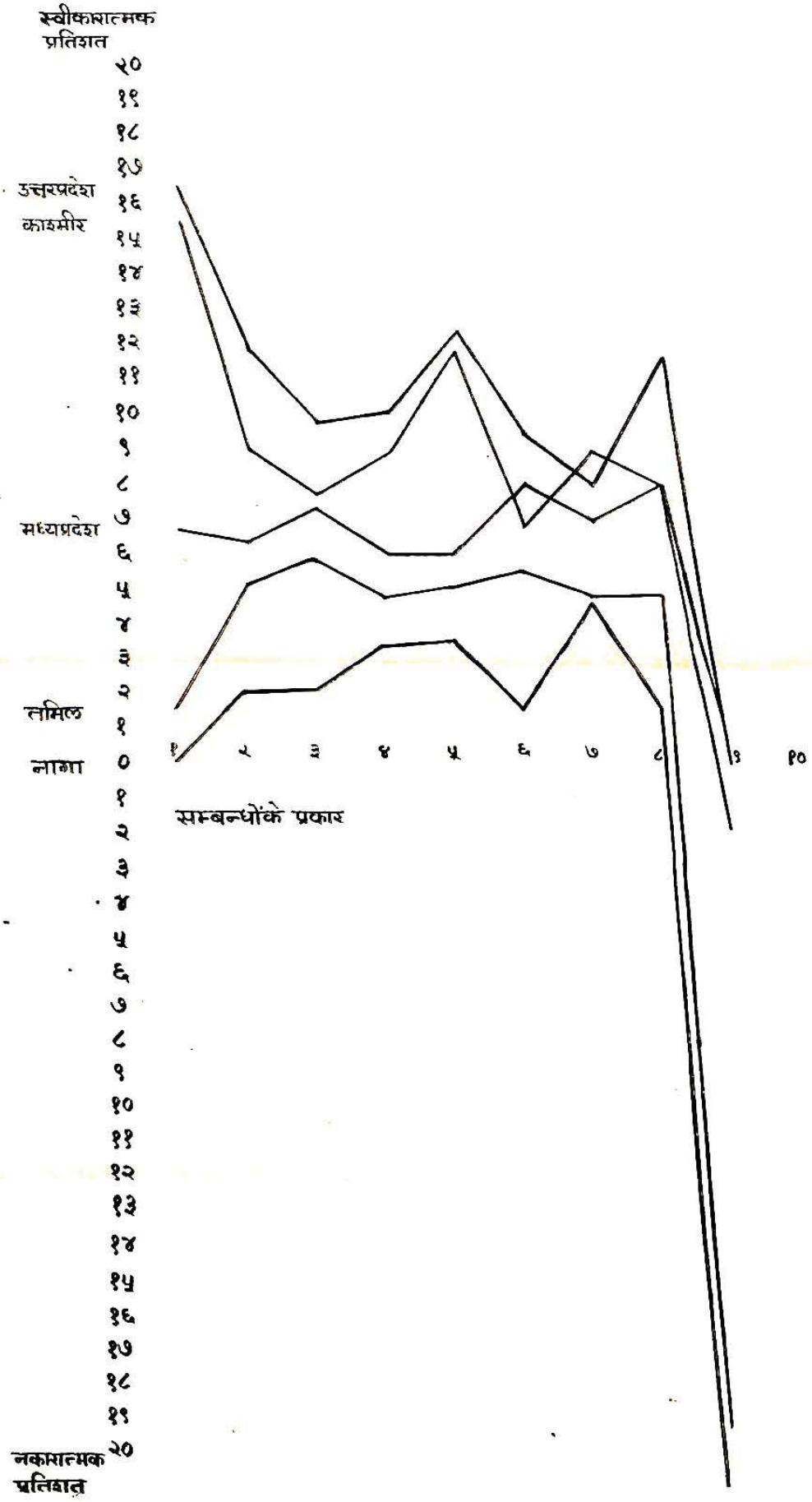

प्रतिक्रिया :

अप्रैल, १९६८ में छात्रोंके बीच प्रश्नावली वितरित कर दी गयी। चूंकि यह समय सत्र विशेषके अन्तका होता है; सभी विद्यार्थी परीक्षामें व्यस्त होते हैं। बहुत-से विद्यार्थियोंने प्रश्नावलीको वापस ही नहीं की। बार-बार आग्रह पर कुछ और लोगोंने प्रश्नावलि लौटायी तो पाया गया कि उनके उत्तर व्यक्तिगत न होकर झुंडमें भरे गये थे। कुछ प्रश्नावलीयोंमें 'हाँ' या 'ना' किसी एक रिश्तेके लिये सभी राज्योंके सामने लिखा गया पाया। कुछ छात्रों ने प्रश्नालवलीको ज्यों-का-त्यों ही वापस कर दिया; क्योंकि उनके मुताबिक संस्कृति विशेष परखनेकी चीज न होकर व्यक्ति विशेष परखना अधिक उपयुक्त होता। कुछ ऐसे भी विद्यार्थी मिले, जिन्होंने प्रतिबन्ध ठीक-ठीक नहीं समझा और अन्य सम्बन्धोंके साथ ही साथ नवें सम्बन्धकी भी स्वीकृति दे दी; जोकि नामुमकिन है। कुछ छात्राओंने पाँचवें और छठे सम्बन्धको अपने लिये अनावश्यक बताया क्योंकि उनलोगोंने अपनी जिन्दगीमें व्यवसाय या नौकरी नहीं करनेका फैसला कर रखा है। इस प्रकारकी प्रश्नावलियाँ वर्तमान अध्ययनके लिये अनावश्यक समझी गयीं। खासकर छात्राओंसे प्राप्त सूचनाओंमें लगभग दो-तिहाई प्रश्नावलियाँ रद्द करनी पड़ीं।

मापदंडकी कल्पना 'अनवरतताके सिद्धान्त' (Theory of continuum) पर आधारित है (गुडे और हैट – १९५२)। यहांपर प्रश्न आरम्भ होनेके बाद अंत तक एक श्रृंखलामें गुड़े होते हैं। टेबुल नं० २ पर विद्यार्थियोंकी प्रक्रियामें जाहिर होते हैं। एक सरसरी नजर डालनेसे मालूम होता है कि १६.२५% छात्र उत्तरप्रदेशमें शादी करनेके पक्षमें है। हमें मालूम है कि ४८% छात्र उत्तरप्रदेशके रहनेवाले हैं। शादीके सम्बन्धमें सर्वाधिक प्रतिशत प्राप्त राज्य अमूमन सूचना देनेवालोंका ही रहा है। लगभग समान प्रतिक्रियायें पटना और भुनेश्वरके अध्ययनोंमें पायी गयी हैं। इस प्रकार काश्मीर (१५.५%), पंजाब (१३.२५%) और बंगाल (१२.%) शादीके मामलेमें क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान प्राप्त करते हैं। इससे उल्टा शादीके लिए सबसे कम स्वीकृति पानेवाले उपसांस्कृतिक क्षेत्रोंमें नागालैंड (०.०%), उड़ीसा (०.२%), असम (१.५%) और तमिलनाडु (१.५%) की शुमार की जा सकती है। वैसे इस प्रकारकी प्रतिक्रियाओं के कारण वर्तमान अध्ययन के बाहर पड़ता है। फिर भी कुछ सांकेतिक तथ्य सुझाये जा सकते हैं। इन राज्योंमें असंवैधानिक या हिन्दी विरोधी कार्यकलाप इनके प्रति प्रकट की जानेवाली भावनाओंके लिये जिम्मेवार हो सकते हैं। इस मामलेमें भौगोलिक दूरी बहुत बड़ा व्यवधान उत्पन्न करती हुयी नजर आयी; क्योंकि हिन्दुस्तानके दो छोरोंपर स्थित काश्मीर और केरलके पक्षमें प्रकट की गयी प्रतिक्रियायें इस तर्कके विपरीत पड़ती है। एक दूसरे सतह पर देखनेसे लगता है कि काश्मीर, बंगाल और केरलके बाद छात्रोंने हिन्दीभाषी क्षेत्रोंके पक्षमें स्वीकारात्मक उत्तर दिया है।

टेबुल नं० २ :

छात्रों द्वारा नौ प्रकारके सम्बन्धोंके प्रति व्यक्तकी गयी प्रतिक्रियायें, विभिन्न उपसांस्कृतिक क्षेत्रोंसे नामसे सामने। (प्रतिक्रियाओंका माप प्रतिशतमें)

उपसांस्कृतिक क्षेत्र	सम्बन्धोंके प्रकार								
	१	२	३	४	५	६	७	८	९
आन्ध्रप्रदेश	२.५	७.५	५.७५	५.०	८.२५	५.७५	७.०	७.०	१०.५
असम	१.५	४.५	५.७५	६.२५	५.०	७.०	५.२५	७.५	१२.७५
बंगाल	१२.०	५.२५	७.२५	७.२५	५.२५	४.७५	७.०	४.५	१३.०
बिहार	९.२५	७.५	६.०	५.७५	८.२५	५.०	५.५	५.२५	—
गुजरात	३.०	५.५	९.७५	९.७५	९.०	८.२५	९.०	४.६५	—
काश्मीर	१५.५	९.०	७.५	८.७५	११.७५	९.७५	९.०	८.०	२.०
केरल	९.५	७.०	९.०	६.५	८.२५	५.७५	५.५	८.०	६.०
महाराष्ट्र	५.५	६.२५	६.५	७.६५	६.२५	७.५	६.२५	६.५	—
मध्यप्रदेश	६.७५	६.२५	७.२५	९.०	९.०	८.०	७.०	८.०	—
मैसूर	४.२५	४.०	५.७५	६.२५	९.०	४.७५	५.५	६.२५	८.५
नागालैंड	०.०	२.०	२.०	३.२५	३.५	१.७५	४.२५	१.५	२१.२५
उड़ीसा	०.५	४.५	४.५	५.२५	४.५	४.७५	५.२५	५.०	—
पंजाब	१३.२५	११.०	५.५	६.७५	७.७५	६.०	७.०	६.५	—
राजस्थान	५.८५	६.२५	६.७५	६.२५	७.७५	६.५	९.७५	७.२५	२.०
तमिलनाडु	१.५	५.०	५.७५	४.७५	५.०	५.५	४.७५	४.७५	१९.२५
उत्तरप्रदेश	१६.२५	१२.०	९.७५	१०.०	१२.५	९.५	८.०	११.२५	—

टेबुल नं० २ पर एक सरसरी निगाह डालनेसे ज़ाहिर होता है कि नवें खंडमें सबसे दूरके रिश्ते दिखाये गये हैं। नागालैंडसे किसीने भी शादीका रिश्ता करना मंजूर नहीं किया और २१.२५% छात्रोंने उन्हें अपने राज्योंसे दूर ही देखना चाहा। इसके साथ ही क्रमशः १९.२५%, १२.६५% और १०.५% विद्यार्थियोंने तमिल, असम और आन्ध्रवासियोंको अपने राज्योंसे निकाल बाहर करनेकी इच्छा व्यक्त की। इसके लिए साथका ग्राफ काफी प्रकाश डालेगा। बंगाल और केरलके निवासियोंके प्रति एक विचित्र प्रकारकी राग-द्वेष (ambivalent) मिश्रित प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी। क्योंकि इनके लिये लगभग समान केरल – शादीके पक्षधर – ९.५%, निष्कासनके पक्षधर – ९.०%) अत्यन्त निकटता (शादी करने) और दूरी (अपने राज्यसे निष्कासित करने) सम्बन्धी भाव प्रकट किये। अगर हम विभिन्न उपसांस्कृतिक क्षेत्रोंके लिए प्राप्तोंको एक क्रममें रखकर देखें, तो स्वीकृति और निष्कासन सम्बन्धी स्कोरोंके आधार पर एक मापदंड (scale) बनाया जा सकता है। जो इस प्रकार होगा :

क्रमांक	स्वीकारात्मक प्रतिशत	उपसांस्कृतिक क्षेत्र	नकारात्मक प्रतिशत
१.	८७.२५	उत्तर प्रदेश	
२.	७६.२५	काश्मीर	२.०
३.	६३.२५	पंजाव	—
४.	५५.२५	मध्यप्रदेश	—
५.	५२.५०	महाराष्ट्र	—
६.	५३.२५	राजस्थान	२.०
७.	४९.७५	गुजरात	—
८.	४९.५०	विहार	—
९.	५३.५०	केरल	६.०
१०.	४४.७५	मैसूर	८.५
११.	४७.२५	आन्ध्रप्रदेश	१०.५
१२.	४६.२५	बंगाल	१३.२५
१३.	३४.२५	उड़ीसा	—
१४.	३१.६५	असम	१२.७५
१५.	३७.००	तमिलनाडु	१९.२५
१६.	१८.२५	नागालैंड	२१.२५

अगर इस 'वॉर कॉम्युलेटिव स्केल' (Bar Commulative Scale) को ऊपरसे नीचेकी तरफ पढ़ें, तो निकटता संबंधी अंक और अगर नीचेसे ऊपरकी ओर पढ़ें, तो दूरी सम्वन्धी 'स्कोर' पढ़नेको मिलते हैं। इस प्रकार एक मापदंड बनता है, जिसपर विभिन्न प्रकारके रिश्तोंके आधार पर निकटता या दूरीकी मपाई की जा सकती है।

सारांश :

उपरोक्त अध्ययनको पूरी तरह परीक्षण करने पर मालूम होता है कि भारतीय तकनीकी संस्थान कानपुरके छात्रोंके लिये भारतीय संघमें समाजिक दूरी क्षेत्र चार प्रकार हैं। प्रथमतः उत्तर प्रदेश, काश्मीर और पंजाब; द्वितीय, मध्यप्रदेश, राजस्थान, विहार, गुजरात और महाराष्ट्र; तृतीय, बंगाल और केरल; और अंतिम, नागालैंड, उड़ीसा, तमिलनाड, और असम। अपने सीमित अध्ययनके आधार पर हमने जो तश्वीर पेश का है, वह निश्चित रूपसे पूरी नहीं है। इन कमियोंको पूरा करनेके लिये शोध पद्धति के अन्य विधियोंका सहारा लेना आवश्यक है। हम एक वार फिर अपने पाठकोंको इस अधूरे चित्रसे होनेवाली गलत फहमीकी याद दिलाना चाहेंगे। साथ ही साथ उनसे गुजारिश करना चाहेंगे कि प्रस्तुत अध्ययनके आधार पर नजदीकी या दूरीके कारणोंको समझनेकी कोशिश न करें। क्योंकि यह विषय अध्ययनकी सीमाके वाहर की चीज है।

नोट :

प्रस्तुत अध्ययनके संदर्भमें लेखक मार्गदर्शन और सुझावके लिये डा० बी० डी० मिश्र, न्यास संकलन (data collection) में कुमारी इंदु जोशी और न्यास-परिष्करण (data processing) में श्री आर० एस० सिंहके सहयोगका आभारी है।

संदर्भ :

वोगार्डस, ई० एस० : 'मेजरींग सोसल डिस्टेंस' जरनल ऑफ अप्लॉयड सोसिआलॉजी, १९२५, पृष्ठ २२९–३०८.

'सोसल डिस्टेंस एन्ड इट्स प्रॉक्टिकल इंप्लिकेशन्स' सोसिआलॉजी एंड सोसल रिसर्च' वो० पृष्ठ २६५–२७१.

गुडे एंड हैट : 'मेथड्स इन सोसियल रिशर्च' मैक्ग्रो हिल बुक्स, १९५९.

कोय, जे० एस० एंड ए० एच० थॉम्पसन — "इथनिक प्रेजुडिसेज लॉफ ह्वाइट एंड निग्रो कालेज स्टुडेंट्स' जनरनल आफ अवनार्मल एंड सोसल साइकोलॉजी, वो० ४८, पृष्ठ ३११–३१४, १९३३

जाहोदा, एम० और अन्य; 'रिसर्च मेथड्स इन सोसल रिलेशन्स' ड्राइडेन, न्यूयार्क १९५१.

कर्ण, एम० एम०; 'इंडियन स्टेट्स ऑन सोसियल डिस्टेन्स स्केल', 'मैन इन इंडिया' वो० ४७ (३), पृष्ठ २२८–२३७; १९६७

प्रोथ, इ० टी० और ओ० के० माइक्स; "सोसल डिस्टेन्स एंड सोसल चेंज इन नियर इस्ट" 'सोसियालॉजी एंड सोसल रिसर्च' वो० .३७, पृष्ठ ३–११; १९५२.

स्पोर्ण, डी० टी०, "सम आस्पेक्ट्स ऑफ प्रेजुडिसेज एज एफेक्टेड बाई रिलिजिन एंड एजुकेशन्' "जरनल ऑफ सोसल साइकॉलॉजी" वो० ३३, पृष्ठ ६७–७६. १९५१.

ह्वाइट, एफ० आर०; 'नीग्रो–ह्वाइट स्टेट्स डिफेरेंसियल्स एंड सोसल डिस्टेंस" अमेरिकन सोसियालॉजिकल रिव्यू, वो० १७ पृष्ठ ५५०–५५८, १९५२

विवेकानंद प्रकाशन गृह, अमदावाद-२२

મરદ કસૂંબલ રંગ ચડે જોરાવરસિંહ જાદવ પૃ. ૨૦૦ મૂ. ૮.૦૦

प्रकीर्ण

ગુજરાતી લોકસાહિત્યમાળા મણકો-૧૦ સં. ડૉ. મંજુલાલ મજમુદાર, બચુભાઈ રાવત, મનુભાઈ જોધાણી પૃ. ૩૨૦ મૂ. ૩.૫૦ **જીવન સંગીત** હરીશ વ્યાસ પૃ. ૧૩૮ મૂ. ૨.૦૦

सरदार पटेल युनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर

રસાયણદર્શન ડૉ. ન. મૂ. શાહ અને અન્ય પૃ. ૨૬૮ મૂ. ૨૦.૦૦